अपना घर

अपना घर
देव, शास्त्र गुरु का
आयतन हो।

— आचार्य विभवसागर

प्राचीन प्रतिमा

मंदिर नया
प्रतिमा प्राचीन हो
अतिशय हो।

– आचार्य विभवसागर

प्राचीन तीर्थ

प्राचीन तीर्थ
अक्षय विशुद्धि के
महाकेन्द्र हैं।

— आचार्य विभवसागर

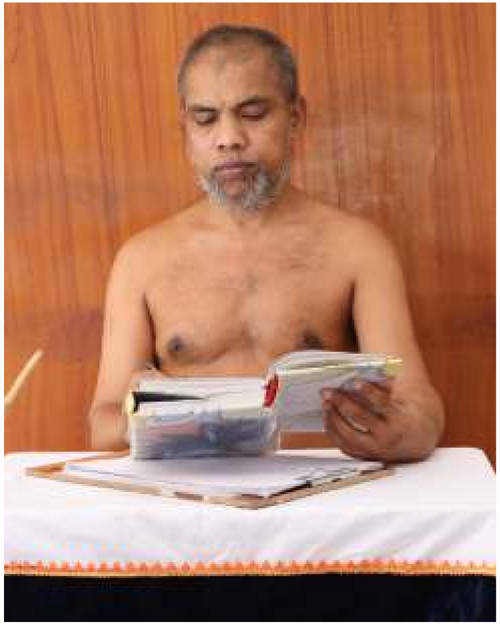

उपयोग

उपयोग का
उपयोग कर लो
हे उपयोगी !

— आचार्य विभवसागर

दाता पहिचान

दान में अहं
नादान ही करता
दाता कभी न।

– आचार्य विभवसागर

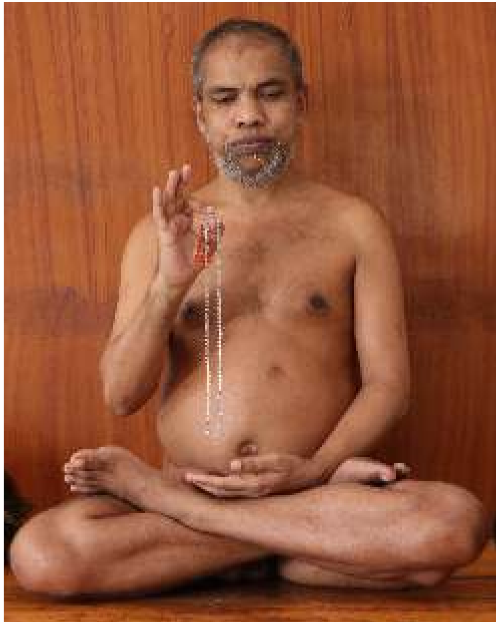

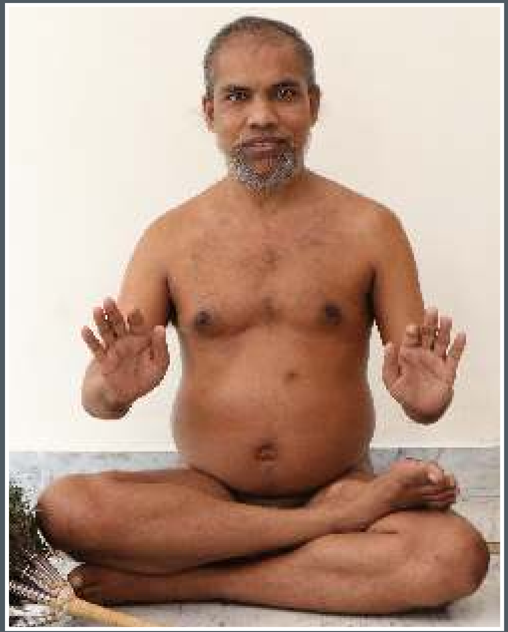

संयम प्रेरणा

प्राणी संयम
इन्द्रिय संयम, दो
संयम धारो।

– आचार्य विभवसागर

दया के चिन्ह

दयालु जीव
रात्रि भोजन नहीं,
भजन करें।

– आचार्य विभवसागर

साधु छवि

ओ! निर्विकार
दिगम्बर मुद्रा भी
अर्हन्त मुद्रा।

– आचार्य विभवसागर

वात्सल्य अंग

वात्सल्य अंग
धर्म का हृदय है,
हृदय तो हो।

– आचार्य विभवसागर

साधु जीवन

साधु जीवन
निर्विकार मन का
प्रमाण-पत्र।

– आचार्य विभवसागर

त्याग धर्म

सब न त्यागो
अनावश्यक त्यागो
त्याग धर्म है।

— आचार्य विभवसागर

दान महिमा

देनदार न
दानदातार बनो
मन हरषे।

– आचार्य विभवसागर

समयसार

समयसार
शुद्धात्म प्रकाशक
परमागम।

—आचार्य विभवसागर

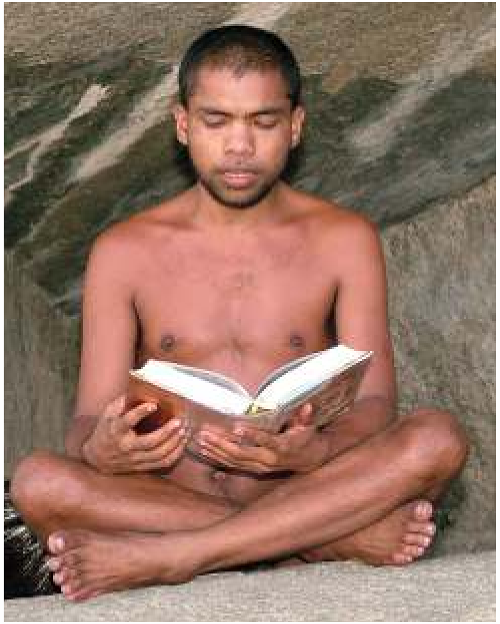

कर्त्तव्य पालन

कार्य में रुचि
कर्त्तव्य पालन का
महामंत्र है।

– आचार्य विभवसागर

कर्त्तव्य पालन मंत्र

श्रम में आस्था
कर्त्तव्य पालन का
सिद्धमंत्र है।

–आचार्य विभवसागर

सदाचरण

अन्य को कष्ट
न पहुँचे यही है
सदाचरण।

— आचार्य विभवसागर

कर्त्तव्य का आधार

सत्य, अहिंसा
कर्त्तव्य का आधार
होना चाहिए।

—आचार्य विभवसागर

अपव्यय

अपव्यय ही
निर्धन बनाता है
दान कभी न।

– आचार्य विभवसागर

श्रेष्ठ जीवन

श्रृंगार नहीं,
संस्कार भी चाहिए
श्रेष्ठ जीवन।

— आचार्य विभवसागर

श्रम महत्व

श्रमकर्ता ही
श्रमणत्व पाता है
श्रमहीन न।

– आचार्य विभवसागर

कर्त्तव्य प्रेरणा

कर्त्तव्य करो
समाज विकास का
यही मंत्र है।

— आचार्य विभवसागर

विकारी मन

विकारी मन
इन्द्रियदास होकर
दुखी जीता है।

– आचार्य विभवसागर

विकास मंत्र

अनुशासित
परिवार, समाज
विकास पाता।

– आचार्य विभवसागर

अनुशासन

सुव्यवस्था
श्रेष्ठ अनुशासन,
कठोरता न।

– आचार्य विभवसागर

कृतज्ञता

उपकार को
स्वीकार किया हो तो,
चुकाना सीखो।

– आचार्य विभवसागर

तीन मंत्र

कर्म सुंदर,
वचन मधुर हो
मन पवित्र।

— आचार्य विभवसागर

मैत्री भावना

मैत्री भावना
समाज को उन्नत
बना देती है।

–आचार्य विभवसागर

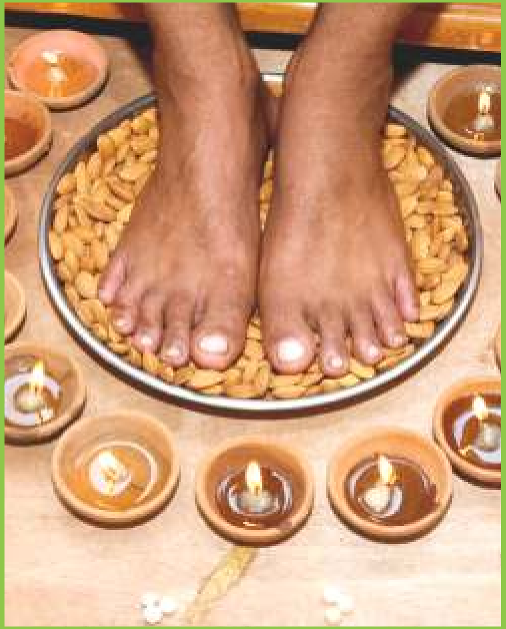

तत्त्वज्ञान

मनोविनोद
तत्त्व-ज्ञानमय हो
आनन्द देता।

– आचार्य विभवसागर

महाकरुणा

महाकरुणा
महापुरुष करें,
निःस्वार्थ भाव।

—आचार्य विभवसागर

करुणाभाव

करुणाभाव
पारस्परिक प्रेम
जागृत करे ।

– आचार्य विभवसागर

समाज गठन सूत्र

करुणाभाव
समाजगठन का
श्रेष्ठ सिद्धान्त।

– आचार्य विभवसागर

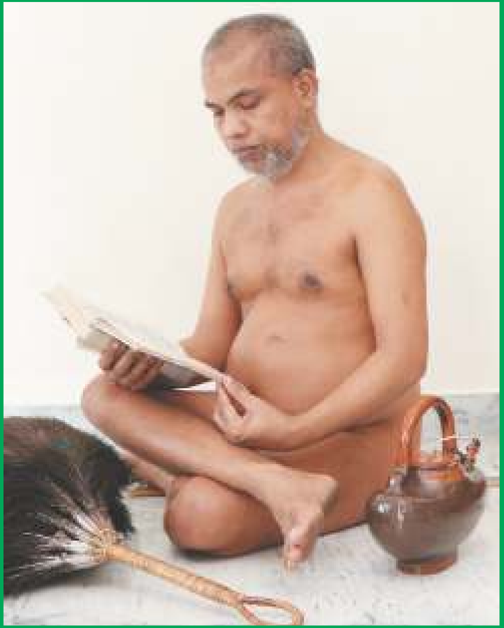

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार ने
मानव समाज को
कुपथ दिया।

— आचार्य विभवसागर

प्रेम महत्व

प्रेम के बिना
विशाल ऐश्वर्य भी
सुख न देगा।

— आचार्य विभवसागर

विवेकवान

भेदभाव न
भेदविज्ञान तो हो
विवेकवान।

– आचार्य विभवसागर

प्रेम–व्यवहार

प्रेम-व्यवहार
मानव समाज औ
पशु चाहते।

–आचार्य विभवसागर

प्रेम बोध

जानवर भी
जानकार होते हैं
प्रेमभाव के।

— आचार्य विभवसागर

लोकहित भावना

समाज में हो
लोकहित भावना
समाज सुखी।

— आचार्य विभवसागर

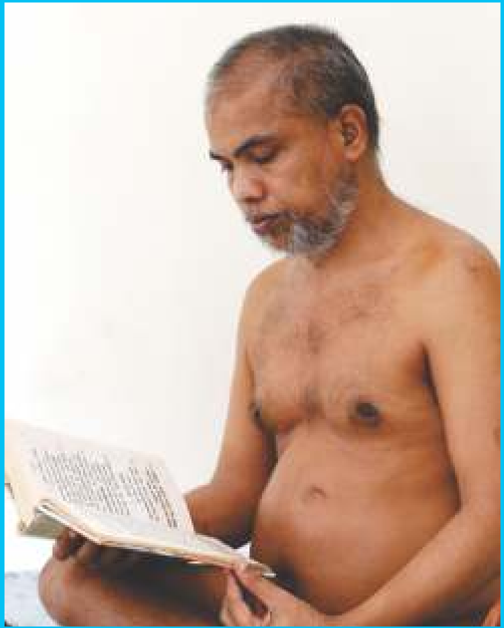

सहानुभूति

सहानुभूति
सामाजिक एकता
का महाधर्म।

– आचार्य विभवसागर

सहानुभूति

दुःख सहो तो
सहानुभूति जन्में
अपने मन।

—आचार्य विभवसागर

आदर्श शिष्य

आदर्श शिष्य
गुरु आज्ञा का
सदा पालन करें।

— आचार्य विभवसागर

दाता दान दे
प्रतिदान न चाहे
सफल दाता।

–आचार्य विभवसागर

निश्छल प्रेम
अद्भुत रहस्य है
स्थायी मैत्री का।

— आचार्य विभवसागर

अन्य की गलती
देखने के पहले
स्वनिरीक्षण।

–आचार्य विभवसागर

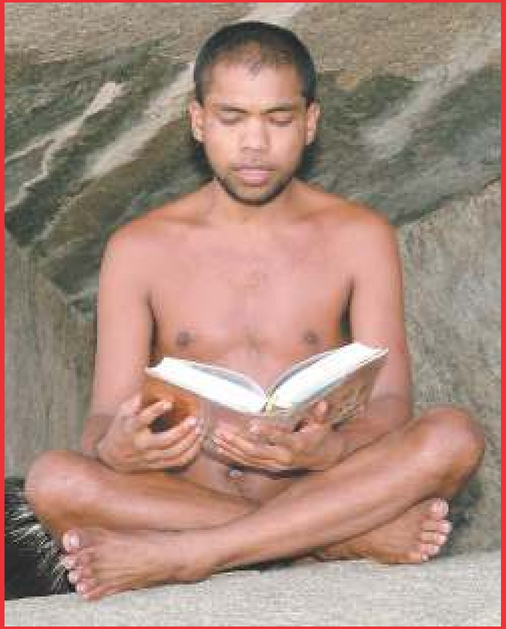

मनतरंग

हिंसक, अहिंसक
दो प्रकार की।

– आचार्य विभवसागर

स्वनिरीक्षण
ईमानदारी से हो
दोष मिटेंगे।

–आचार्य विभवसागर

निवृत्ति मार्ग आसान तो नहीं है पर श्रेष्ठ है।

– आचार्य विभवसागर

स्व में बुराई
पर में भलाई ही
देखना भला।

— आचार्य विभवसागर

शुद्धभाव से
आत्मा शुद्ध होता है
शुभ से शुभ।

— आचार्य विभवसागर

पाप छोड़ दो
दुःख छूट जायेगा
छोड़ के देखो।

— आचार्य विभवसागर

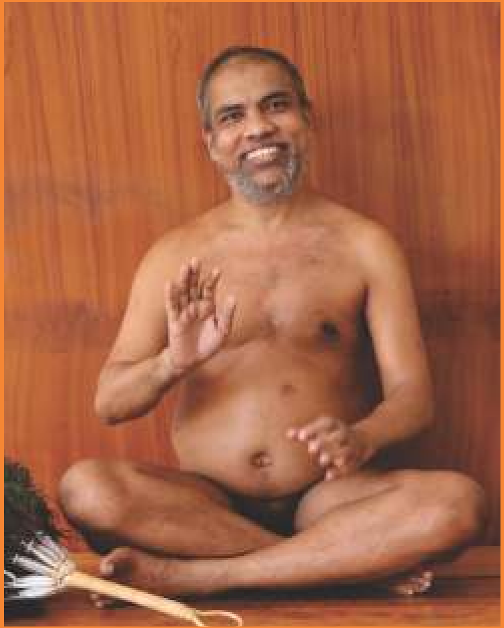

चारित्र धर्म
साम्यभाव में होता
धारो तो सही।

– आचार्य विभवसागर

मोह छुड़ा दे
मोक्ष पद दिला दे
धर्म है वही।

—आचार्य विभवसागर

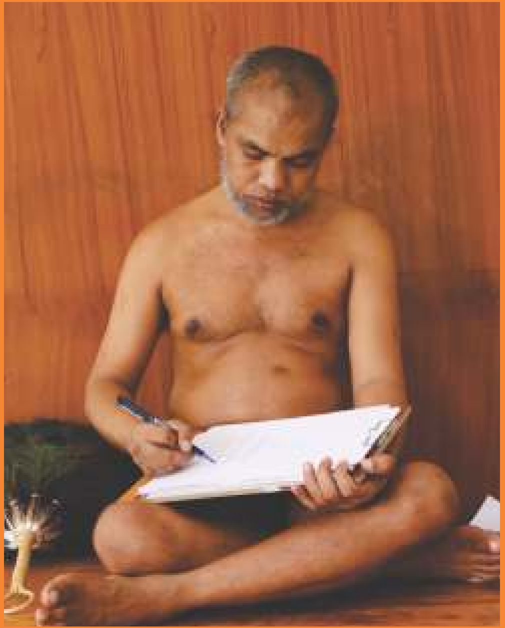

उद्वेग नहीं
वेग हो संवेग हो
निर्वेग होने ।

— आचार्य विभवसागर

विजय पाने
अपनी हीनता न
दृढ़ विश्वास।

—आचार्य विभवसागर

हमारा जन्म
लेने के लिए नहीं,
देने के लिए।

— आचार्य विभवसागर

कर्मों की गति
बड़ी विचित्र होती
सीता से पूछो।

—आचार्य विभवसागर

कल्पवृक्ष भी
पुण्यवानों को सदा
फल देते हैं।

– आचार्य विभवसागर

आम का पेड़
अपना स्वाद कभी
नहीं लेता है।

–आचार्य विभवसागर

कल्पकाल में
चौबीस तीर्थंकर
धर्मनायक।

–आचार्य विभवसागर

अनुशासन
समाज को उन्नत
सुखी बनाता।

—आचार्य विभवसागर

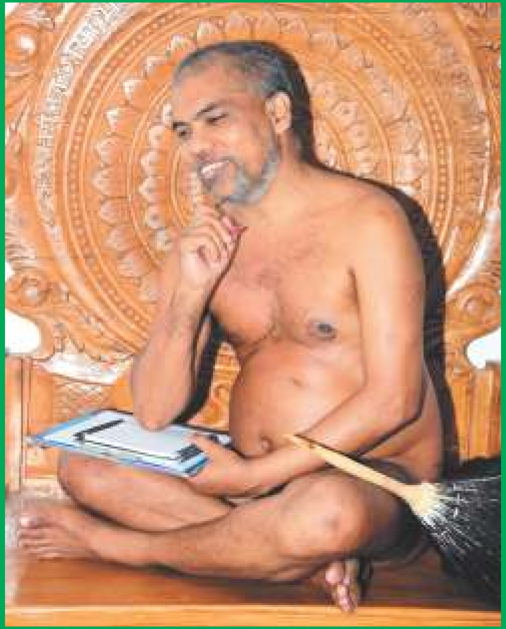

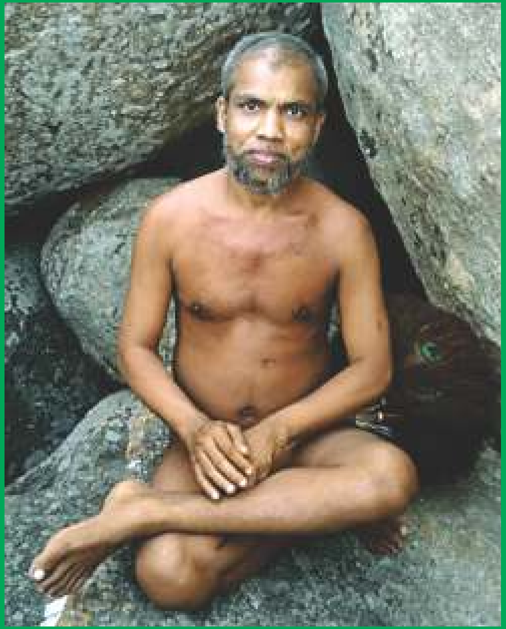

अनुशासन
गतिशील बनाता
प्रगति देता।

— आचार्य विभवसागर

गुरु आज्ञा भी
गुरु से बड़ी होती
गुरु ने कहा।

—आचार्य विभवसागर

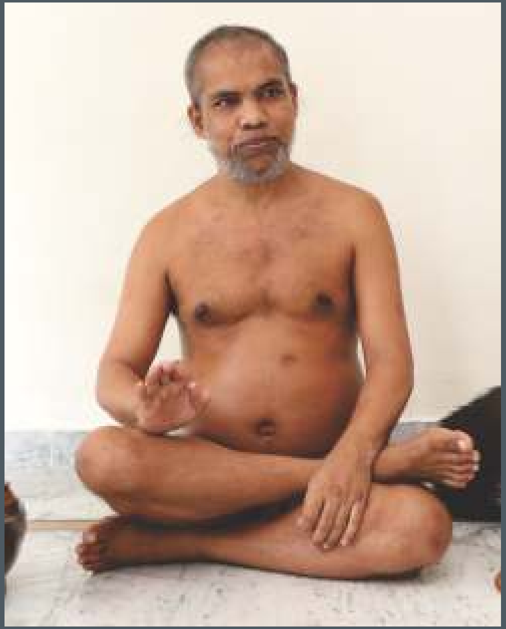

अनंतज्ञान
अनंतसुख देता
जिन ने कहा।

—आचार्य विभवसागर

साधना करो
आराधना भी करो
विराधना न।

—आचार्य विभवसागर

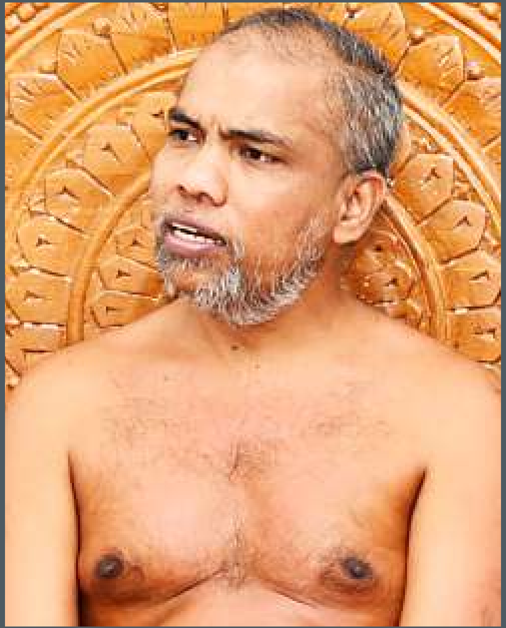

शुद्ध को जानो
तो शुद्ध को पाओगे
अनुभव से।

— आचार्य विभवसागर

कम खाना हो
कमाकर के खाओ
स्वस्थ्य रहोगे।

—आचार्य विभवसागर

आलस्य तजो
शास्त्र अभ्यास करो
स्वाध्याय तप।

– आचार्य विभवसागर

कल्पना करो
सौ कल्पनाएँ, एक
काम करेंगी।

—आचार्य विभवसागर

केवलज्ञान
ज्ञेय अनंतानंत
ज्ञान में आयें।

—आचार्य विभवसागर

आत्मज्ञान में
झलकें लोकालोक
छलकें नहीं।

—आचार्य विभवसागर

पूर्व प्रशंसा
पश्चात् निन्दा करना
निर्दयता है।

— आचार्य विभवसागर

भाव गद्गद् हों
पवित्र भावनाओं
का परिचय।

–आचार्य विभवसागर

समता और
सरलता, श्रमण
का परिचय।

– आचार्य विभवसागर

सहयोग की
भावना का प्रयोग
प्रेम से करो।

– आचार्य विभवसागर

अधिकारों की
माँग करने वाले
कर्त्तव्य पालें।

– आचार्य विभवसागर

रत्न भी बाँटो
पूर्ण आदर साथ
हे श्रेष्ठ दाता !

—आचार्य विभवसागर

निवेदन हो
हाथ जोड़कर के
शिष्टाचार है।

— आचार्य विभवसागर

लक्ष्य को पाओ
तुम्हारे विरोधी भी
पूजा करेंगे।

–आचार्य विभवसागर

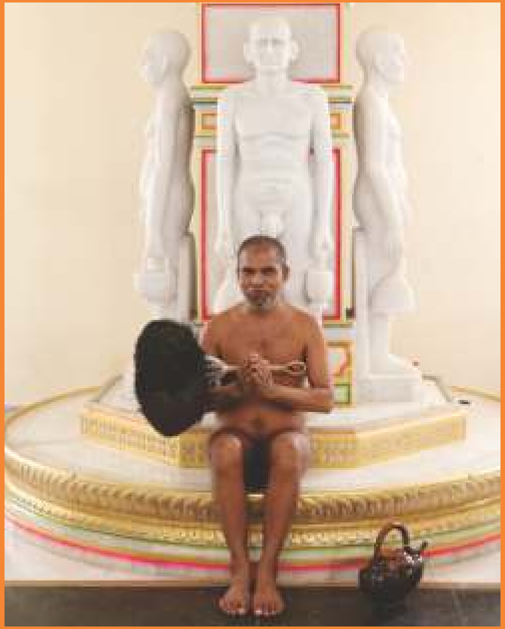

ना माँ खराब
ना ही पिता खराब
कर्म खराब।

– आचार्य विभवसागर

महापुरुष!
बीते हुए सुकाल
का स्मरण हो।

–आचार्य विभवसागर

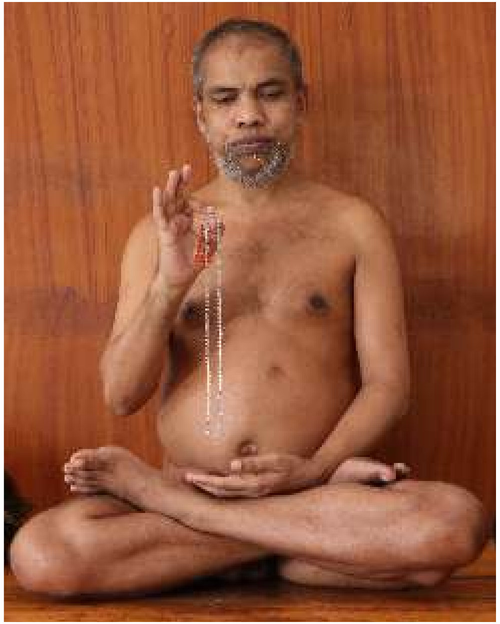

प्रसन्न मन
आगामी शुभ लाभ
की, सूचना है।

— आचार्य विभवसागर

गुण कीर्ति का
श्रम उन्नति का
मूलमंत्र है।

–आचार्य विभवसागर

नीचे तो देखो
नीचा मत दिखाओ
महान बनो।

—आचार्य विभवसागर

धर्म का दान
प्रवचन करना
जिनवाणी से।

—आचार्य विभवसागर

पुराण ही तो
प्राणों का आधार है
पढ़ो तो दिखें।

– आचार्य विभवसागर

स्वाध्याय तप
मन सुस्थिर होगा
करके देखो।

—आचार्य विभवसागर

परहित में -
लगा मन, अवश्य
सुख पायेगा।

– आचार्य विभवसागर

ज्ञानी बनने
जिनवाणी देकर
धर्मदान दो।

– आचार्य विभवसागर

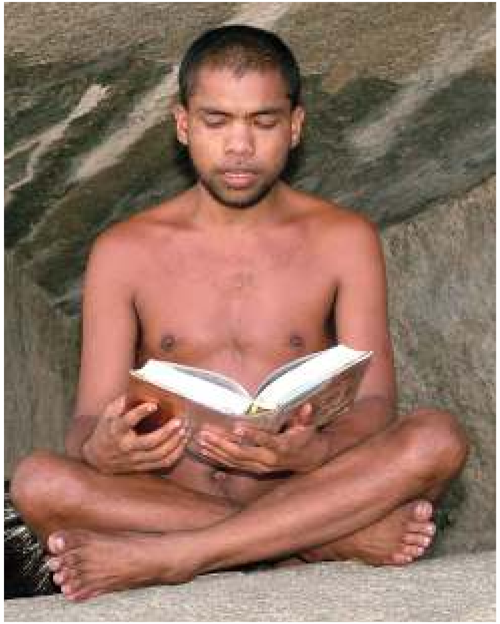

गुरु समीप
विनय भाव बैठो
विद्या आयेगी।

—आचार्य विभवसागर

मृदुभाषण
महानपुरुषों की
कुलविद्या है।

–आचार्य विभवसागर

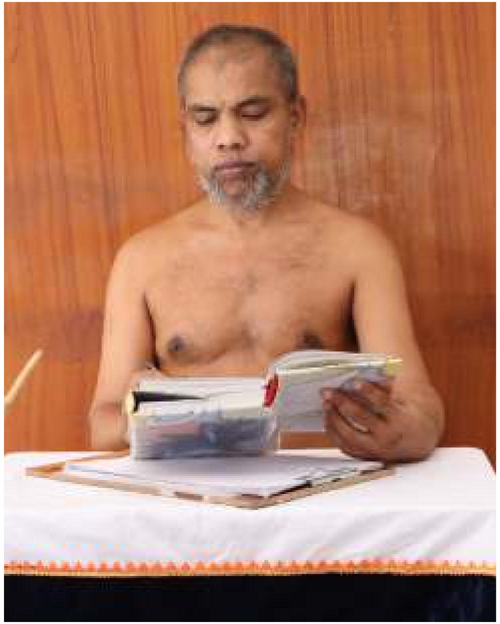

जिनके द्वारा
मुझे वैराग्य आये
वे मेरे मित्र।

— आचार्य विभवसागर

विभाव त्यागो
आत्म स्वभाव रमो
सर्वज्ञ हो जा।

–आचार्य विभवसागर

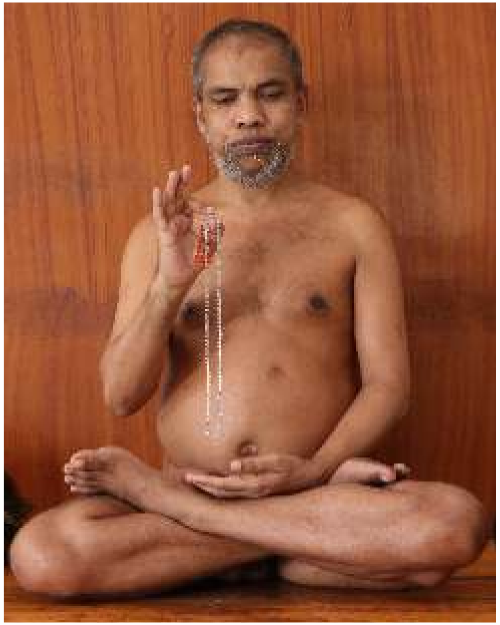

विभाव त्यागी
स्वभाव अनुरागी
सर्वज्ञ होओ।

— आचार्य विभवसागर

इन्द्रियज्ञानी
सर्वज्ञ नहीं होता
अज्ञ होता है।

– आचार्य विभवसागर

मन्दोदय है
दुःख सह रहा हूँ
समता धार।

— आचार्य विभवसागर

पापों से भय
महान पुरुषों को
सदा होता है।

– आचार्य विभवसागर

परिपक्वता
मिष्टता घोल देती
फलों में देखो।

—आचार्य विभवसागर

जो धूप सहें
वे छाया सदा देते
वृक्षों को देखो।

– आचार्य विभवसागर

परोपकार
करने में उदार
महापुरुष।

–आचार्य विभवसागर

आज्ञा पालन
यथोचित रीति से
प्रेम पूर्वक।

– आचार्य विभवसागर

यदि बड़े हो
बड़प्पन दिखाओ
तो बड़े सही।

—आचार्य विभवसागर

चित्त प्रसन्न
दृष्टि स्नेह भरी हो
मेल मिलाप।

—आचार्य विभवसागर

निष्प्रमाद हो
व्रत पालन कर
भव तरने को।

– आचार्य विभवसागर

प्रज्ञ अपनी
गुण प्रशंसा सुन
लज्जित होते।

—आचार्य विभवसागर

समझ हो तो
सब समझ आता
सही समझ।

– आचार्य विभवसागर

मूर्ति स्थापना
से सदा यश कीर्ति
स्थापित होती।

– आचार्य विभवसागर

मोही जीवों से
भववर्धक चेष्टा
हो ही जाती है।

–आचार्य विभवसागर

निर्विकार हो
मोह क्षोभ तज दे
दिगम्बर हो।

– आचार्य विभवसागर

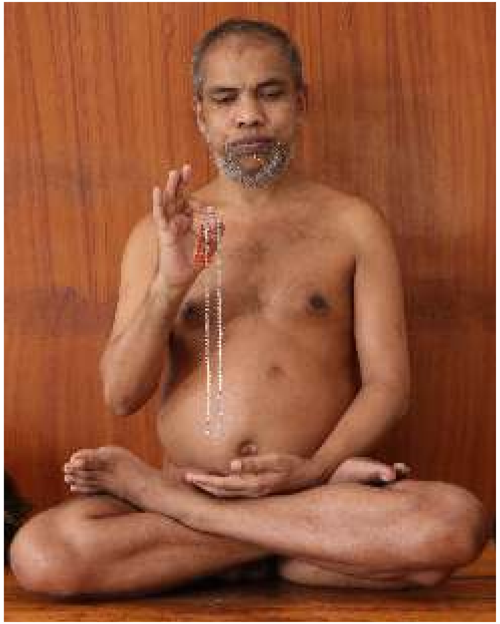

हीनता पर
विजय पाने को
दृढ़ विश्वास जागा।

– आचार्य विभवसागर

शुद्ध भाव से
आत्मा शुद्ध होता है
शुभ से शुभ।

—आचार्य विभवसागर

वाह! क्या बल
कोटि शिला उठा ली,
पिच्छी न उठी।

– आचार्य विभवसागर

वाह! क्या स्मृति
भोगों में भूले रहे
मोक्ष की राह।

– आचार्य विभवसागर

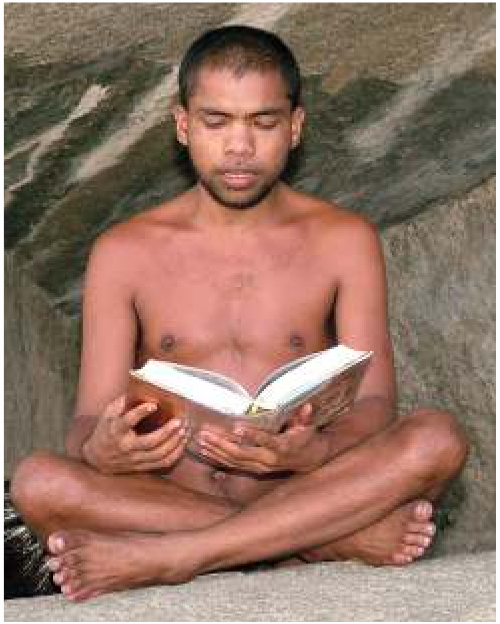

मोह सर्प है
महामंत्र तो जपो
विष न चढ़े।

— आचार्य विभवसागर

समुद्र जल पिया
तो भी तृप्ति न हुई
ओस चाटते ?

– आचार्य विभवसागर